प्रकाशन तिथि : 15 फरवरी, 2021
प्रेषण तिथि : 19 फरवरी, 2021
'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 23 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

सरकार एवं विधानसभा के ध्यानाकर्षण हेतु सौंपे ज्ञापन

आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने एवं राजस्थान की सरकारी नौकरियों में राजस्थान के निवासियों को वरीयता देने संबंधी विषयों पर सरकार एवं विधानसभा का ध्यानाकर्षण करने के लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा 10 फरवरी से प्रशासनिक अधिकारियों के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन देने प्रारम्भ किए गए हैं। दोनों विषयों पर अलग-अलग ज्ञापन बनाकर सौंपे जा रहे हैं। ज्ञापन में ईडब्ल्यूएस आरक्षण की विसंगतियों का जिक्र करते हुए आग्रह किया गया है कि सरकार इस वर्ग के अभ्यर्थियों को भी अन्य आरक्षित वर्गों की तरह नौकरियों आदि में अधिकतम आयु, न्यूनतम अहर्ता अंक एवं फीस आदि में छूट प्रदान करे। साथ ही विवाहित महिलाओं की आय गणना में पिता व पति दोनों की अपेक्षा केवल पति की आय ही जोड़ने का आग्रह किया गया है। वर्तमान नियमों में परिवार की परिभाषा में माता, पिता, पति/पत्नी, स्वयं व अविवाहित भाई, बहिन को शामिल माना गया है, इसमें भी संशोधन कर परिवार की परिभाषा का आधार राशन कार्ड को बनाने का आग्रह किया गया है। वर्तमान नियमों के तहत प्रतिवर्ष ईडब्ल्यूएस प्रमाण-पत्र का नवीनीकरण करवाना पड़ता है एवं नवीनीकरण के समय संपूर्ण प्रक्रिया पुनः करवानी पड़ती है। ज्ञापन में यह मांग की गई है कि नवीनीकरण की मियाद तीन वर्ष की जाए एवं नवीनीकरण की प्रक्रिया को भी सरल किया जाए। ज्ञापन में निवेदन किया गया है कि मुख्यमंत्री की पूर्व घोषणा के अनुरूप ईडब्ल्यूएस के लिए आर्थिक पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन किया जाए ताकि इस वर्ग की समस्याओं के लिए एकीकृत समाधान की व्यवस्था विकसित हो सके। ईडब्ल्यूएस के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास एवं छात्रवृत्तियों की भी मांग की गई है। मुख्यमंत्री जी से आग्रह किया गया है कि वे केन्द्र सरकार को पत्र लिखकर अन्य आरक्षित वर्गों की तरह राजनीतिक संस्थाओं में भी यह आरक्षण लागू करने का आग्रह करें। साथ ही उनसे निवेदन किया गया है कि कतिपय अधिकारी दुर्भावनावश प्रमाण-पत्र बनाने में बाधाएं उत्पन्न करते हैं, ऐसे अधिकारियों के विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान करते हुए प्रमाण-पत्र बनाने की स्पष्ट प्रक्रिया बनाने का आग्रह किया गया। दूसरे ज्ञापन में आग्रह किया गया है कि देश में अनेक राज्यों में उन राज्यों के स्थानीय निवासियों को वहां की नौकरियों में वरीयता देने के नियम बने हुए हैं जबकि राजस्थान में ऐसे कोई नियम नहीं हैं इसीलिए यहां बाहरी राज्यों के अनेक लोग स्थानीय लोगों के नौकरी के अवसर कम कर देते हैं। इसीलिए मुख्यमंत्री जी के नाम ज्ञापन सौंप कर यह मांग की गई है कि नियमों में संशोधन कर राजस्थान के मूल निवासियों को वरीयता देने संबंधी कानून बनाए जाएं क्यों कि बाहर से आने वाले सभी अभ्यर्थी सामान्य वर्ग की सीटों पर नौकरी लगते हैं। इसके लिए सरकार द्वारा मांगे गए बजट सुझावों में भी तत्संबंधी सुझाव देने का अभियान चलाया गया था।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'स्व. तनसिंह चौहान की प्रथम पुण्यतिथि'

28 जनवरी को स्व. तनसिंह चौहान जूना की प्रथम पुण्यतिथि आदर्श स्टेडियम बाड़मेर में मनाई गई जिसमें बाड़मेर-जैसलमेर के विभिन्न समाज बंधुओं व धर्मों के लोगों ने अपने हितैषी स्व. तनसिंह चौहान को पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रमुख माननीय भगवानसिंह रोलसाहबसर ने स्व. चौहान को सर्वसमाज का हितैषी बताते हुए कहा कि चौहान ने समाज के हर वर्ग, धर्म, जाति के जरुरतमंद व्यक्ति को वित्तीय सहायता देकर उसके कठिन समय में साथ दिया तथा सभी समाज के समाज भवनों, संस्थानों में आर्थिक सहयोग दिया जो सदा-सर्वदा याद रखा जाएगा। समाज ऐसे दानदाताओं व भामाशाहों को युगों-युगों तक याद रखता है इस अवसर पर बाड़मेर रावल त्रिभुवनसिंह जी, स्वामी प्रतापपुरी जी, नंदलाल जी जोशी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिलाधीश बाड़मेर एवं शहर के बाहर गांवों से भी हर जाति, धर्म के सैंकड़ों लोग उपस्थित थे। पुण्यतिथि के अवसर पर रक्तदान किया गया। स्व. चौहान के नाम से सड़क मार्ग का नामकरण एवं पुलिस लाईन में स्मृति भवन का लोकार्पण किया गया।

बिहार मंत्रिमंडल में चार नए राजपूत

बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने हाल ही में अपने मंत्रिमंडल में विस्तार किया। इस विस्तार के तहत बनाए गए मंत्रियों में चार राजपूत हैं। छातापुर विधानसभा से भाजपा विधायक नीरजसिंह बबलू, गोपालगंज से भाजपा विधायक सुभाष सिंह, चकाई से निर्दलीय विधायक सुमित कुमार सिंह एवं धमदाहा से जयदू विधायक लेसीसिंह को मंत्री बनाया गया है।

शहीद राजेन्द्रसिंह को सेना मैडल

28 सितम्बर 2019 को जम्मू के बटोट में आतंकियों से मुकाबला करते हुए शहीद हुए मोहनगढ़ निवासी राजेन्द्रसिंह भाटी को 12 फरवरी को जोधपुर में सेना द्वारा आयोजित अलंकरण समारोह में मरणोपरांत सेना मैडल से नवाजा गया। मैडल ग्रहण करते हुए शहीद की पत्नी जमना कंवर ने कहा कि राजपूत का धर्म होता है विजय या वीर गति। मेरे पति को ये दोनों मिले। यह मैडल मेरे लिए उनकी निशानी है।

संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम का आगाज

संघ के हीरक जयंती वर्ष के तहत संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के तहत ऐसे स्थलों की यात्रा कर वहां स्नेहमिलन आदि आयोजित किए जा रहे हैं जहां पूर्व में शिविर आदि कार्यक्रम आयोजित हुए। 8 फरवरी को जालोर संभाग में इस कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। पाली प्रांत के सिराणा में दो चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर पूर्व में आयोजित हो चुके हैं। 8 फरवरी को सिराणा एवं उसके निकट स्थित चेण्डा व वायद गांव में स्नेहमिलन रखे गए। प्रातः 10 बजे वायद में स्थित मदनसिंह के विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित हुआ वहीं दोपहर 12.30 बजे चेण्डा स्थित रावली पोळ में कार्यक्रम हुआ। शाम को सिराणा में कार्यक्रम रखा गया जिसमें युवा, वृद्ध एवं महिलाएं भी शामिल हुए। इस कार्यक्रम में संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी भी उपस्थित रहे। महिलाओं का अलग स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें रश्मि कंवर देलदरी ने संघ चर्चा की।

गुजरात के सौराष्ट्र संभाग में संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के तहत 8 फरवरी को मोरचंद गांव की हाईस्कूल के विद्यार्थियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में गुजरात के शाखा कार्यालय प्रमुख छन्नुभा पच्छेगांव ने पूज्य तनसिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी दी। हीरक जयंती वर्ष को लेकर चर्चा की गई एवं विद्यार्थियों को अभी से अपनी पॉकिट मनी से बचत करने को कहा ताकि वे मुख्य कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जयपुर आ सकें। बैठक में शामिल अध्यापकों को गीता और समाज सेवा पुस्तक एवं संघ परिचय पुस्तिका भेंट की गई।

मध्य गुजरात संभाग में संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के तहत 10 फरवरी को साणंद तहसील के पूर्व में शिविर स्थल रहे स्थानों में सम्पर्क किया गया। दोपहर 2 बजे से 3.30 बजे तक प्राथमिक विद्यालय चेखला में, इसके बाद सोपान फार्म हाउस गरोड़िया में व तदुपरांत हाई स्कूल गोधावी तथा वन श्री फार्म गोधावी में सम्पर्क किया। चेखला, गोधावी व गरोड़िया गांव में संघ के सहयोगियों से संघ चर्चा की गई एवं उन्हें समाज चरित्र पुस्तक भेंट स्वरूप दी गई। दोनों विद्यालयों के आचार्यों को यथार्थ गीता भेंट की गई। संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के तहत 12 फरवरी को अहमदाबाद शहर में पूर्व में हुए शिविरों के स्थलों की यात्रा की गई। इस दिन सोला भागवत विद्यापीठ, नवयुग हाई स्कूल कैंपस नरोड़ा, अपोलो हाई स्कूल कैंपस ऐनासण नवा नरोड़ा में सम्पर्क किया है। संघ के सहयोगियों को गीता और समाज सेवा पुस्तक भेंट दी गई। वहीं अन्य को यथार्थ गीता भेंट दी गई। सम्पर्क में संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी सहित केशुभा काणेटी, शक्तिसिंह वी काणेटी, जगतसिंह वलासणा, देवेन्द्रसिंह काणेटी आदि शामिल रहे।

त्रिपुरी का कलचुरी - चेदि राजवंश

युवराज प्रथम के बाद उसका पुत्र लक्ष्मण देव शासक बना, वह भी अपने पिता की भांति एक योग्य शासक था। शासक बनने के बाद उसने दिग्विजय की नीति अपनाई। सर्वप्रथम उसने पूर्व की ओर विजय अभियान किया। उसने बंगाल, उड़ीसा और कौशल पर विजय प्राप्त की। पश्चिम की ओर अभियान करके उसने गुजरात और लाट प्रदेश पर विजय प्राप्त की और सोमनाथ पहुंचकर भगवान सोमेश्वर का पूजन किया। उसने जूनागढ़ के आभीरों पर भी विजय प्राप्त की। उसने अपनी पुत्री का विवाह चालुक्य नरेश विक्रमादित्य चतुर्थ से किया। लक्ष्मण देव भी अपने पिता की तरह शैव अनुयायी था, उसने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया, उसने बिल्हारी में लक्ष्मण सागर नामक विशाल तालाब का निर्माण जनकल्याण के उद्देश्य से करवाया। उसके बाद उसका पुत्र युवराज देव द्वितीय शासक बना। वह एक निर्बल और अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। उसको वेंगी के चालुक्य शासक तैल द्वितीय तथा परमार शासक मुंज ने पराजित किया। त्रिपुरी पर कुछ काल के लिए परमारों का आधिपत्य हो गया। पराजित युवराज देव को उसके सामन्तों ने हटा दिया और उसके पुत्र कोक्कल द्वितीय को शासक बना दिया। उसने सैन्य शक्ति जुटा कर परमारों से त्रिपुरी को मुक्त करवाया और कलचुरियों की शक्ति और मर्यादा को पुनः स्थापित किया। कोक्कल द्वितीय ने गुजरात के चालुक्य शासक चामुण्डराज को परास्त किया, उसने कुन्तल तथा गौड़ शासकों के विरुद्ध सफलता प्राप्त की। उसने 1019 ईस्वी तक शासन किया। कोक्कल द्वितीय के बाद उसका पुत्र गांगेयदेव शासक बना उसने 1019 से 1041 ईस्वी तक शासन किया। वह कलचुरी वंश का एक महान प्रतापी शासक था। ऐसा माना जाता है कि अपने शासन के प्रारंभिक काल में वह चन्देल नरेश विद्याधर की अधीनता स्वीकार करता था परन्तु विद्याधर की मृत्यु के बाद उसने उत्तर भारत का सार्वभौम सम्राट बनने का अभियान प्रारम्भ किया। उसने अंग, उत्कल, काशी तथा प्रयाग पर विजय प्राप्त की, प्रयाग में उसने अपना निवास स्थान बनाया।

काशी को संभवतः उसने पालों को पराजित कर उनसे छीना, 'प्रबंध चिंतामणी' के अनुसार उसने अपने पुत्र कर्णदेव को वहां शासक बनाया। गांगेय देव ने उत्तर पश्चिम में पंजाब तथा दक्षिण में 'कुन्तल' तक सैनिक अभियान किए और विजय प्राप्त की। एक नेपाली ग्रंथ में उसे तीर भुक्ति का स्वामी बताया गया है। इस प्रकार गांगेयदेव ने कलचुरी राज्य को एक विशाल साम्राज्य में बदल दिया। खैरालेख के अनुसार उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। वह एक योग्य सेनानायक व प्रजापालक शासक था, उसके दरबार में अनेक विद्वान आश्रय लेते थे। वह अपने पूर्वजों की भांति शैव मतानुयायी था और उसने भी शैव मंदिरों और मठों का निर्माण करवाया। **(क्रमशः)**

राजपूत सेवा समिति की बैठक संपन्न

नवलगढ़ की राजपूत समाज सेवा समिति की बैठक कैप्टन दीप सिंह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में समाज में व्याप्त रूढियों जैसे मृत्यु भोज, दहेज का दिखावा, महिला शिक्षा अभाव, शादी में शराब आदि को दूर करने के उपायों पर विचार किया गया। समाज की कुछ महिलाएं अपने दम पर विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ रही हैं तथा इसी प्रकार कुछ युवक भी अपनी मेहनत व लगन से आगे बढ रहे हैं उनका सम्मान करने पर भी विचार किया गया। शिक्षा के साथ संस्कार हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर लगाने पर भी विचार किया गया। होली के बाद गोठड़ा में स्नेहमिलन रखने का निर्णय किया गया। मीटिंग में राजेन्द्र सिंह चिराना, करणी सिंह गिरावड़ी, डॉ.मोहन सिंह मोहनवाड़ी, सुबे सिंह कसेरु, भँवर सिंह कसेरु, नरेन्द्र सिंह खिरोड़, विक्रम सिंह मझाऊ, प्रकाश सिंह कसेरु आदि काफी संख्या में गणमान्य जन उपस्थित थे।

विरोध स्वरूप मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

जोधपुर के जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में छात्र एवं विश्वविद्यालय के हितार्थ आंदोलनरत छात्र नेताओं पर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर प्रशासन द्वारा दयनात्मक कार्रवाई करने के विरुद्ध श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान को पत्र में लिखा गया। पत्र में जहां छात्रों की आवाज को दबाने के लिए की जा रही कार्रवाई के प्रति विरोध ज्ञापित किया गया वहीं मुख्यमंत्री ने एक अभिभावक रूप में छात्रों द्वारा उठाए जा रहे बिंदुओं पर सदाशयता पूर्वक विचार करने का आग्रह किया गया।

सरकार एवं विधानसभा के ध्यानाकर्षण हेतु ज्ञापन

(पेज तीन से लगातार)

10 फरवरी 2021 को इन दोनों विषयों पर ज्ञापन देना प्रारंभ किया गया। 10 फरवरी को जिला मुख्यालय अजमेर व उपखंड मुख्यालय शिव (बाड़मेर) में ज्ञापन दिया गया। 11 फरवरी 2021 को नागौर जिले के कुचामन सिटी, लाडनूं व नागौर जिला मुख्यालय पर, जैसलमेर जिले में जिला मुख्यालय जैसलमेर, फतेहगढ़, मोहनगढ़, भणियाणा, पोकरण, फलसुंड में ज्ञापन दिए गए। बीकानेर के जिला मुख्यालय, बाड़मेर मे जिला मुख्यालय के साथ साथ रामसर, बालोतरा, चौहटन में, अजमेर जिले के केकड़ी व सरवाड़ व पाली जिले के सुमेरपुर व रानी में ज्ञापन सौंपे गये। इसी क्रम में 12 फरवरी 2021 को नागौर जिले में मेड़ता, डीडवाना, डेगाना, नावां, जायल में, जैसलमेर जिले के सांकड़ा, रामगढ़ में, सीकर में जिला मुख्यालय के अलावा लोसल, उपखंड कार्यालय सीकर, श्रीमाधोपुर, लक्ष्मणगढ़ में, अजमेर जिले के नसीराबाद में ज्ञापन सौंपे गए। इसी दिन बाडमेर के गिड़ा, सिवाना, सेड़वा, गडरा, सिणधरी में, झुंझुनूं के उदयपुरवाटी में, जालोर जिले के रानीवाड़ा, आहोर, सांचोर, जसवंतपुरा, भीनमाल, पाली जिले के बाली एवं जिला मुख्यालय सिरोही में प्रशासनिक अधिकारियों को मुख्यमंत्री जी के नाम ज्ञापन सौंपे गए। ज्ञापन देने का यह क्रम समाचार लिखे जाने तक जारी रहा। इसी क्रम में जनप्रतिनिधियों से संपर्क कर मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखवाये जा रहे हैं। 13 फरवरी तक हमीर सिंह भायल विधायक सिवाना, जनक सिंह भाटी प्रधान फतेहगढ़ (जैसलमेर), मान सिंह, पूर्व विधायक परबतसर (नागौर), रामलाल जाट, विधायक माण्डल (भीलवाड़ा), श्रीमती रसाल कँवर, प्रधान जैसलमेर, मनोज न्यांगली, पूर्व विधायक सादुलपुर (चुरू), तने सिंह सोढा, प्रधान सम (जैसलमेर), मुकेश भाकर, विधायक लाडनूं (नागौर), श्रीमती सुशीला कँवर पलाड़ा, जिला प्रमुख,अजमेर, खुशवीर सिंह जोरावर, विधायक मारवाड़ जंक्शन (पाली), भगवत सिंह तंवर, प्रधान सांकड़ा, (जैसलमेर), बिहारी लाल बिश्नोई, विधायक नोखा (बीकानेर) आदि ने माननीय मुख्यमंत्री को इस विषय में पत्र लिखकर सहयोग किया है। जनप्रतिनिधियों से मिलकर सहयोग मांगने का यह क्रम जारी है।

सीकर

नागौर

लाडनूं

बीकानेर

डीडवाना

रानी

चौहटन

जसवंतपुरा

मेड़ता

सिणधरी

जैसलमेर

संपादकीय

‘डर के आगे जीत है’

हमारे समाज में जो भी सामान्य से कुछ ऊंची सुविधायुक्त स्थिति को प्राप्त करता है वह सार्वजनिक रूप से सामाजिक विषयों पर बोलने से कतराने लगता है। वह स्थिति चाहे प्रशासन में हो चाहे राजनीति में। उक्त व्यक्ति के मन में एक अजीब सा डर समा जाता है और वह सार्वजनिक रूप से सामाजिक विषयों पर बोलने से बचने लगता है। व्यक्तिगत बातचीत में संबंधित व्यक्ति उन सभी विषयों पर अपनी राय देता है, उन पर काम करने की चाह प्रकट करता है, करता भी है लेकिन सार्वजनिक रूप से ऐसा अवसर आने पर वह कन्नी काटता ही नजर आता है। एक अजीब तरह के अज्ञात भय से वह ग्रसित हो जाता है। हर राजपूत के लिए ऐसी उदात परम्पराओं वाली कौम में जन्म लेना गर्व की बात है और गर्व होना भी चाहिए लेकिन प्रायः यह देखा जाता है कि किसी विशिष्ट सुविधायुक्त स्थिति को प्राप्त राजपूत व्यक्तिगत स्तर पर भले ही इस गर्व को अनुभव करते हो लेकिन सार्वजनिक जीवन में जब कभी इस गौरवमयी जाति में जन्म को स्वयं के लिए सौभाग्य बताने का अवसर मिलता है या इस सौभाग्य से संबंधित होने का आभास कराने का अवसर आता है, वे प्रायः बचने का ही प्रयास करते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक ‘समाज चरित्र’ के तीसरे प्रकरण ‘साधक की जातीय भावना’ में लिखा है कि ‘राजनीतिक निहित स्वार्थों ने इस जातीय भावना के विरुद्ध बड़ा ही षड्यंत्रकारी प्रचार प्रारम्भ किया जिसके फलस्वरूप सांप्रदायिकता शब्द का जन्म हुआ और इतना प्रयोग में आने लगा कि नेहरू जी से लेकर धानिया भगानिया कांग्रेसी भी इसके प्रयोग से नहीं झिझकता। इस आक्रमण के शिकार हिन्दु हुए और राजस्थान में राजपूत हुए। जाट यदि अपनी सभा या बोर्डिंग बनाते हैं तो उनके लिए वह किसान सभा या किसान बोर्डिंग हो गया और राजपूत यदि भूस्वामी संघ या हणवंत बोर्डिंग बनावें तो उनके लिए सामंती संघ या सांप्रदायिक बोर्डिंग हो गया।’ पूज्य तनसिंह जी ने यह पुस्तक 1956 में लिखी और इन पंक्तियां में जिस षड्यंत्र की चर्चा उन्होंने की है उस षड्यंत्र का असर आज तक हमारे समाज में व्याप्त है। इसीलिए कोई बड़ा अधिकारी किसी सामाजिक विषय पर बोलने से कतराता है कि कहीं मैं सांप्रदायिक न कहलाऊं। इसीलिए हमारे समाज के राजनेता समाज की कोई भी न्याय युक्त बात कहने का अवसर आने पर बगलें झांकने लगते हैं। इसी का परिणाम है कि जो लोग जाति के नाम पर टिकट पाते हैं, जाति के एकमुश्त वोट पाते हैं, जाति के नाम पर अपना मानकर सक्रिय होने वाले कार्यकर्ता पाते हैं, जाति के कोटे से सरकारों में पद पाते हैं वे ही जाति की बात करने से कतराते हैं। लेकिन हमारे सामने प्रश्न यह है कि हम क्या उपाय करें कि इस षड्यंत्र के प्रभाव को निशेःष कर सकें? क्या इस स्थिति के लिए जिम्मेदार केवल वे राजनेता या अफसर ही हैं जो ऐसा अवसर आने पर बगले झांकते हैं या समाज के लोग भी इस हेतु अपनी जिम्मेदारी खोजने का प्रयास करते हैं। यदि हम वस्तुनिष्ठ रूप से विश्लेषण करें तो इसमें गलती केवल उन राजनेताओं या तथाकथित बड़ों की ही नहीं है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि हर व्यक्ति अपनी सुविधाजनक स्थिति के छिनने से डरता है। अधिकारी के मन में यह डर बना रहता है कि यदि मैंने अपने समाज की बात करनी प्रारम्भ की तो मेरी पोस्टिंग या ट्रांसफर किसी असुविधाजनक जगह हो जाएगा। इसी प्रकार राजनेताओं के मन में भी यह भय समाया रहता है। ऊपर वर्णित षड्यंत्र के कारण उनमें एक हीन भावना भी बैठी रहती है कि उन षड्यंत्रकारियों की नजर में मेरी कोई नकारात्मक छवि न बन जाए। इन्हीं सब भयों के कारण यह स्थिति बनती है। इस कारण का निवारण उनको स्वयं को तो करना ही है क्यों कि जिस प्रकार के जातीय भाव की अपेक्षा वे आम राजपूत से करते हैं, उसका अभाव उनमें होगा तो यह कितने दिन संभव हो पाएगा कि आम राजपूत उन्हें अपना माने। लेकिन समाज के लोगों को भी इसमें उनका सहयोग करना पड़ेगा। उनमें यह विश्वास पैदा करना पड़ेगा कि समाज के लोग आपकी सामाजिक भावना में सदैव साथ बने रहेंगे। इस सामाजिक भाव के कारण आपको हानि पहुंचाने वाले लोगों के विरुद्ध लामबद्ध होकर वर्तमान में उपलब्ध वैध साधनों का उपयोग कर उन्हें सबक सिखाएंगे। समाज के लोग अपनी जागरुकता के बल पर समाज की एक सकारात्मक छवि पेश करेंगे और एक जिम्मेदार समाज की भांति व्यवहार करेंगे तथा समाज की छवि पर नकारात्मक असर डालने वाले तत्वों को नकार कर छवि को होने वाले नुकसान से बचाएंगे तो निश्चित रूप से हमारी जातीय भावना के विरुद्ध षड्यंत्र करने वाली सत्ताओं का मुंह बंद होगा साथ ही यदि हम सामाजिक शक्ति को इतना मजबूत करें कि समाज के राजनेताओं, अफसरों आदि विशिष्ट स्थिति प्राप्त लोगों को संरक्षण मिल सके तो ऐसे लोगों में व्याप्त भय दूर होगा और वे व्यक्तिगत रूप से इस जाति में जन्म मिलने पर महसूस होने वाले गौरव का अपने सार्वजनिक जीवन का भी सबल साधन मान सकेंगे। लेकिन फिर भी डर तो उन्हें स्वयं को ही छोड़ना पड़ेगा क्योंकि वे यदि विशिष्ट है तो उन्हें विशिष्ट बनना भी पड़ेगा। विशिष्ट की विशिष्टता इसमें है कि वह देने में, त्यागने में, भय रहित होने में सामान्य लोगों का प्रेरक बने और इसी से सबका डर दूर होगा और डर के आगे ही तो जीत है। इस जीत की ओर बढ़ने के लिए क्या आम और क्या खास सभी को सकारात्मक भाव से सक्रिय होना पड़ेगा।

खरी-खरी

महात्मा के साधनों की सीमा

महात्मा गांधी ने भारतीय संस्कृति के उदात्त तत्व सत्याग्रह और अहिंसा का उपयोग कर संसार के लोगों को एक नई दिशा प्रदान की। सरकारों पर नैतिक दबाव बना कर जनता की बात सुनने को मजबूर करने का एक महात्मा का वह अद्भुत प्रयोग था जिसने उन्हें संसार के समक्ष एक महामानव की स्थिति प्रदान की। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने स्वयं के व्यक्तित्व पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। अपनी इन्द्रियों व मन का दमन कर उन पर स्वयं की सत्ता को प्रतिष्ठित किया। स्वयं के अहंकार को न्यूनतम स्तर पर लेकर गए और अपने भीतर के महापुरुषत्व को जागृत कर महात्मा की स्थिति अर्जित की। ऐसा महात्मा जब सार्वजनिक जीवन में उतरता है तो उसके साधन भी उनके अनुकूल ही होते हैं, उनका अपने उन साधनों के प्रति विश्वास भी दृढ़ होता है क्योंकि उनका अपने आप पर, अपने मन पर, अपनी इन्द्रियों पर एवं अपने अहंकार पर नियंत्रण भी दृढ़ होता है। ऐसा महात्मा जो भी साधन अपनाता है वह साधन भी पवित्र बन जाता है और अंत तक पवित्र बना रहता है। महात्मा गांधी ने इसी भाव से सत्याग्रह और अहिंसा को साधन के रूप में अपनाया। यहां महत्ता उन साधनों की अपेक्षा उन्हें उपयोग में लाने वाले उन महात्मा के भीतर की पवित्रता की थी और उन्होंने दृढ़तापूर्वक उस पवित्रता को बनाए रखा। उनकी उसी पवित्रता के बल पर तात्कालिक समय की सर्वाधिक शक्तिशाली सत्ता ने उनका लोहा माना। उनके द्वारा अपनाए गए ये साधन कालांतर में आम हो गए और सरकार से अपनी मांगे मनवाने के लिए किए जाने वाले प्रत्येक आंदोलन के साधन बनने लगे। आंदोलन कौन कर रहा है, उसका उद्देश्य क्या है, उसका स्वयं का व्यक्तित्व कैसा है, उसका अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कितना है, उसका मन अपनी क्षुद्र वृत्तियों को नियंत्रित करने में कितना सफल हुआ है ये सब प्रश्न गौण होते गए और केवल गांधीजी द्वारा अपनाए गए साधन ही महत्ता पाते गए। इसी का परिणाम है कि आज उनके द्वारा अपनाए गए इन पवित्र साधनों की मारक क्षमता क्षीण होती जा रही है। आज सरकार द्वारा विदेशी नागरिकों को भारत की नागरिकता देने के नियमों का विरोध करने के लिए चला लंबा आदोलन अपने आपको सत्याग्रही एवं अहिंसक बताने के बावजूद सफल नहीं हो पाया। इसी का परिणाम है कि दो माह से अधिक समय तक देश की राजधानी को घेर कर बैठे किसान सरकार से अपनी बात मनवाने में सफल नहीं हो पा रहे जबकि उनका भी दावा यही है कि वे सत्याग्रही एवं अहिंसक आंदोलन कर रहे हैं। देश का बड़ा जनमानस इतने लंबे आंदोलन के बाद भी अपनी सहानुभूति आंदोलनकारियों के प्रति नहीं बना पाया जबकि दावा तो इन आंदोलनकारियों का भी सत्याग्रही और अहिंसक होने का है। ऐसे में प्रश्न खड़ा होता है कि आखिर क्यों ये आंदोलनकारी ऐसी सरकार को अपनी मांगों को मानने के लिए मजबूर नहीं कर पा रहे जिसे हर 5 वर्ष में जनता की अदालत में जाकर समर्थन जुटाना पड़ता है। क्यों ये आदोलन गांधीजी के आंदोलनों की तरह जनमानस के आंदोलन नहीं बनकर लोगों के एक समूह मात्र के आंदोलन बन कर रह गए? कारण ढूंढने जाएंगे तो पाएंगे कि इन आंदोलनों के पीछे कोई महात्मा नहीं है जिसने अपने आप पर नियंत्रण स्थापित कर अपनी बात रखनी प्रारंभ की है। गांधीजी द्वारा लिखी आत्मकथा के अनुसार वे आंदोलन के इस बात की भी सावधानी रखते थे कि कहीं उनके आंदोलनों से उनको भी कोई कष्ट नहीं हो जिनके विरुद्ध वे आंदोलन कर रहे हैं और हम आज के आंदोलनों को देखें जो दावा तो अहिंसक और सत्याग्रही होने का करते हैं लेकिन जहां आंदोलन कर रहे होते हैं वहां के आमजन के जीवन को ठप्प कर देते हैं। गांधीजी के आंदोलनों में जहां उनका स्वयं का अहंकार शुन्य के स्तर तक होता था वहीं आज के आंदोलनकारियों का उद्देश्य ही अपने अहंकार की तुष्टि के लिए सरकारों को झुकाना होता है। समस्या को सुलझाने की अपेक्षा ऐसे आंदोलनों का लक्ष्य ही आंदोलनकारियों के अहं की तुष्टि बन जाता है और ऐसे में सरकारों व आंदोलनकारी नेताओं की एक दूसरे को झुकाने की जिद में मूल मुद्दे नेपथ्य में चले जाते हैं। इस पूरे विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधीजी के साधनों की सीमा गांधीजी तक ही है। इन साधनों को अपनाने वाले को पहले गांधीजी होना पड़ता है। यदि कोई गांधीजी बने बिना गांधीजी के साधनों को अपनाएगा तो वह विकृति ही पैदा करेगा और ऐसी विकृति हमें यत्र तत्र दिखाई दे रही है। महात्मा के साधनों के लिए महात्मा के स्तर तक यात्रा ही इसकी प्रथम आवश्यकता है और आमजन महात्मा नहीं होता। महात्मा तो बिरले ही पैदा हुआ करते हैं और उन बिरलों में ही उनके साधनों का समुचित उपयोग करने की क्षमता होती है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

कविता

प्रभात वेला का दिव्य दर्शन यहां पर
हंसी खुशी और अपनों का प्रेम यहां पर
ध्येय, ध्यान, धीरता का संदेश यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे..
ज्ञान, गुरू, गरिमा यहां पर
तप, तपस्या और तपस्वी यहां पर
मिलना-मिलाना, मिलकर रहना ध्येय यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे..
बौद्धिक-बुद्धिमता का चिंतन यहां पर
संगीत ताल की लय यहां पर
ज्ञान-अज्ञान की पहचान यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे....
मंत्र, यज्ञ, गीता का ज्ञान यहां पर
भक्ति-शक्ति में देवों की अनुभूति यहां पर
नाटक -नृत्य में संस्कृति का दर्शन यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे...
संघर्षशीलता, सहनशीलता, स्वाभिमान यहां पर
स्नेह सादगी की दिव्य ज्योतियाँ यहां पर
आत्मानुभूति-आत्मावलोकन का मार्ग यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे..
क्षात्र धर्म -कर्म का सींचन यहां पर
एकता-अखण्डता का भाव यहां पर
जौहर और शाको का इतिहास यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे...
साधना सत्य की आराधना यहां पर
जीवन का सार्थक दृश्य यहां पर
नवपीढ़ी में गुंजती संस्कारो की पुकार यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे...
धर्म, अर्थ, कर्म से मोक्ष की यात्रा यहां पर
गुरूवर के ज्ञान की गरिमा यहां पर
खेल-खेल में शिक्षा का सार यहां पर ।।
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे...
भक्ति शक्ति की वीरता-धीरता यहां पर
शांति-शीतलता का वातावरण यहां पर
संस्कारों से परिपूर्ण जीवन यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे....
गुंजती पुकार क्षात्र धर्म की यहां पर
माता-पिता सा स्नेह यहां पर
कौम की सेवा की बात यहां पर
सांघिक जीवन की वीण अनूठी रे..

खुशबू कंवर तड़वा

जर्रा-जर्रा हिन्द की माटी, ऊँची-ऊँची करे पुकार।
अंग संग रखो नानक बाणी, रोम रोम में देश का प्यार।
जिस धरती से जुडी हुई है, अमर कहानी वीरों की।
जिस धरती की कोख से जन्मी, गाथा रांझे हीरों की।
जिस धरती पर पली बढ़ी है, बाणी संत फकीरों की।
जिस धरती से साँझ पड़ी है, गुरु गोबिंद के तीरों की।
उस धरती पर तांडव कर रही, बुच्चड़ खूनी तलवार।
अंग संग रखो नानक वाणी....।
जिस धरती ने गैरों को भी, अपने गले लगाया है।
आदिकाल से दुनियां को, प्रेम का पाठ पढ़ाया है।
हमले का हमलावर ने, जिस पल बिगुल बजाया है।
अगले पल ही शूरवीरों नें, उसको मार भगाया है।
आज मची है उस धरती पर, अफरा तफरी मारममार।
अंग संग रखो नानक वाणी.....।
जिस धरती के नदियां पौधे, पत्थर पूजे जाते हैं।
पशु पंखेरू जिस धरती पर, मस्ती में इठलाते हैं।
जिस धरती के जंगल उपवन, जीवन को महकाते हैं।
सूरज चाँद सितारे जिसको, निस दिन शीश झुकाते हैं।
घोर मायूसी और लाचारी, हर चेहरा क्यूं है गमखार।
अंग संग रखो नानक वाणी......।
जहाँ पे प्रताप, दुर्गादास जैसे वीर हुए।
बालमीक रविदास कबीरा, तुलसीदास जैसे विद्वान हुए।
शिवाजी , विरम देव , झांसी रानी जैसे महान हुए।
राजगुरु , सुखदेव , भगत सिंह जैसे जवान शहीद हुए।
कांप उठी रूह उस धरती की, देखा करती चीख पुकार।
अंग संग रखो नानक वाणी....।
वतन मेरे के पहरेदारो, अपनी अनख पहचानों तुम।
क्या होते थे, क्या तुम हो गए, कहाँ चले ये जानों तुम।
जिस विरसे के मालिक थे, उसको भी तो जानों तुम।
वतन-परस्ती गहना अपना, ऐसा मन में ठानों तुम।
पुनः भारत मां पुकार रही है अब शेर बनकर जागो तुम
अंग संग रखो नानक वाणी....।

- थानसिंह खबडाला

मैं पथिक हूं

मैं पथिक हूं
पथ भटकाने वाली
मायावी उलझन में,
मेरे अंतर का गीत
नहीं सोता।
मेरी फितरत है तेज
तूफानों से टकराने की।
ग्रीष्म के झंझावतो में
ठहरता नहीं यह तन, क्योंकि
मैने सीखा है चलना।
राख में ढूंढता अंगारे,
हर पल ,हर क्षण अपलक
स्वाध्याय, शिक्षण और श्रम
मेरे जीवन का गहना।
डर नहीं है मुझे आंधी
और अकालों का,
सुखों को जलाकर भी
जीवन की सैर करता हूं
उजड़े उपवन का पुष्प
न कोई चाह और शर्तें
संकल्प की भीतरी प्रेरणा से
मुसीबतें, मग की बाधाएं
नतमस्तक होकर मेरा
शक्ति-सामर्थ्य, दुगुना कर
देती हैं
आते हैं दुख दर्द पर
पथ रोक न पाते हैं
एक ध्येय और एक मार्ग पर
कदम बढ़ते जाते हैं।

-कु. मायावी

राजपूत बॉलीबाल प्रतियोगिता

गुजरात के श्री राजपूत विद्यासभा युवा संगठन द्वारा राजपूत बॉलीबाल टूर्नामेंट का भव्य आयोजन किया गया। 24 जनवरी रविवार को आयोजित इस प्रतियोगिता में कुल 34 टीमों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में भावनगर व पांची धोलेरा की टीम विजयी हुई। अनुशासन, धैर्य के साथ हुई इस प्रतियोगिता ने सामाजिक एकता का संदेश दिया। इस प्रतियोगिता में अतिथि के रूप में अनेक गणमान्य लोग उपस्थित हुए। श्री राजपूत विद्यासभा के अध्यक्ष एवं प्रमुख उद्योगपति अश्विनीसिंह सरवैया ने सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का आभार प्रकट किया।

रामदेवरा में जनप्रतिनिधि सम्मेलन तय

रामदेवरा में 8 फरवरी को संभाग प्रमुख गणपतसिंह अवाय के नेतृत्व में बैठक रखी गई। बैठक में तय किया गया कि आगामी 14 मार्च को रामदेवरा में जैसलमेर जिले के सभी जनप्रतिनिधियों का एक सम्मेलन रखा जाएगा। इस सम्मेलन में सरपंच, पंचायत समिति सदस्य, जिला परिषद सदस्य, प्रधान, पूर्व प्रधान, जिला प्रमुख, पूर्व विधायकों व सांसद आदि को आमंत्रित किया जाएगा। यह सम्मेलन श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती वर्ष के तहत आयोजित किया जाएगा। बैठक में गादीपति राव भोमसिंह तंवर, गिरधारी सिंह धोलिया, राणीदान सिंह छायण, देवीसिंह भणियाणा आदि लोग उपस्थित रहे।

राजेश्वरी जादौन

श्री शक्तिपाल सिंह इनायती की पुत्री राजेश्वरी जादौन ने सत्र 2019-20 में कक्षा 10वीं की परीक्षा में हिन्दी विषय में 97 प्रतिशत अंक हासिल किए। छात्रा के कुल 74 प्रतिशत बने हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

शाखामृत

विगत 25 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी की जयंती से प्रति सोमवार को संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी व प्रति गुरुवार को माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा के वर्चुअल उद्बोधन प्रारम्भ किए गए हैं। ये साप्ताहिक उद्बोधन पूरे हीरक जयंती वर्ष में जारी रखने की योजना है। संघ के विभिन्न संभागों में लगने वाली वर्चुअल शाखाओं में मंगलवार व बुधवार को महावीरसिंह जी के उद्बोधन पर एवं शुक्रवार व शनिवार को अजीतसिंह जी के उद्बोधन पर चर्चा होती है।

25 जनवरी को पहली कड़ी में 'श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि' विषय पर चर्चा करते हुए महावीर सिंह जी ने बताया कि जब भी कोई संगठन बनाता है तो उसका कोई न कोई कारण होता है और वह कारण व्यक्तिगत, समाजिक, राजनीतिक अथवा तात्कालिक परिस्थिति जन्य भी हो सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना भी सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए की गई है। हमारा समाज तो राजपूत समाज है लेकिन 'क्षत्रिय' शब्द वर्णाश्रम प्रणाली से जुड़ा हुआ है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - ये चार वर्ण हैं। इनमें कोई ऊंचा अथवा नीचा नहीं है। छुआछूत आदि विकृतियाँ बाद में पैदा हुई हैं, ये मूल वर्णाश्रम प्रणाली का अंग नहीं हैं। वर्ण तो चार स्वभाव का भेद है। व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार कर्म करता है और पूरे संसार में चार प्रकार के स्वभाव वाले लोग पाए जाते हैं। उसी के आधार पर यह चार श्रेणियां बनाई गई हैं। धर्म रक्षा हेतु दुर्जनों का विनाश और सज्जनों की रक्षा का जिसका स्वभाव है वह क्षत्रिय है। कर्मणा जन्म और जन्मना वर्ण होता है। यद्यपि यह सदैव आवश्यक नहीं कि वर्ण विशेष में जन्म लेकर किसी व्यक्ति का स्वभाव वैसा ही हो। इसमें कभी कभी अपवाद भी होता है। परशुराम, विश्वामित्र, बुद्ध, महावीर आदि अनेक अपवाद हमारे यहाँ हुए हैं। लेकिन स्वाभाविक रूप से वर्ण जन्मना ही होता है। गांधी जी ने भी इस बात को स्वीकार किया है। समय के साथ हमारी व्यक्तिगत विकृतियों ने हावी होकर वर्णाश्रम प्रणाली को भी विकृत कर दिया। विगत 1000 वर्षों में बाहरी आक्रमणों के कारण ये विकृतियाँ और भी अधिक बढ़ीं। वर्णों में विशुद्ध रूप से उसी प्रकार के स्वभाव के लोग बहुत कम बचे। क्षत्रिय में भी शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, संघर्षशीलता, दान, ईश्वरीय भाव जैसे स्वाभाविक गुण लुप्तप्रायः से हो गए थे। समाज स्वयं भी बड़े-छोटे के भेद से ग्रसित था, शिक्षा भी अत्यंत कम थी, परस्पर ईर्ष्या और द्वेष का प्रसार था। समाज की ऐसी परिस्थितियों को देखकर पूज्य श्री तनसिंह जी के हृदय में जो पीड़ा जागृत हुई, उसी पीड़ा के कारण उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की।

शाखा की अगली कड़ी में 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और समाज' विषय पर उद्बोधन देते हुए उन्होंने बताया कि संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी ने संघ की स्थापना उनकी दृष्टि में समाज में जो अभाव थे उनको दूर करने के लिए की अर्थात संघ समाज के लिए है। समाज के ही लोग समाज के हित में कार्य करें इसीलिए संघ की स्थापना हुई। गुण, कर्म, स्वभाव की समानता ही किसी समाज का आधार होती है। लेकिन आज हमारे समाज में ऐसी समानता की कमी है, इस कमी को पूरा करने का कार्य संघ कर रहा है। संघ समाज के लिए बना है लेकिन समाज संघ के लिए नहीं बना है। धर्म की मान्यताओं की समाज में पुनर्स्थापना हो और वे समाज के जीवन व्यवहार में उतरें इसका प्रयास श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है क्योंकि धर्म के ज्ञान के बिना कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं हो सकता।

इसी प्रकार 8 फरवरी को शाखा की तीसरी कड़ी में 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और राष्ट्र' विषय पर उद्बोधन देते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्र का अर्थ केवल भौगोलिक सीमाओं में आबद्ध भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं है। उस भूभाग में रहने वालों के आपसी संबंध, उनके विचार, धार्मिक मान्यताएं, परम्पराएं, इतिहास आदि मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं। राष्ट्र के निवासियों की व्यक्तिगत, भाषाई, सांस्कृतिक आदि विभिन्नताओं को एकता के सूत्र में धार्मिक मान्यताओं की समानता द्वारा ही बांधा जा सकता है। इस दृष्टि से कोई भी राष्ट्र समुदाय निरपेक्ष तो हो सकता है, लेकिन धर्मनिरपेक्ष नहीं हो सकता। श्री क्षत्रिय युवक संघ का आधार क्षत्रियत्व है जिसका अर्थ है अपने प्राण देकर भी अपने राष्ट्र की, अपने प्रदेश की रक्षा करना। इस दृष्टि से संघ राष्ट्रीयता की विशुद्ध भावना के निर्माण का कार्य कर रहा है। राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद में अन्तर समझाते हुए उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप द्वारा अपने न्यायसम्मत अधिकार को भी राष्ट्रहित में त्यागने को तैयार हो जाना राष्ट्रीयता है वहीं महाभारत काल में भीष्म पितामह द्वारा राज्य की रक्षा के लिए अधर्म का साथ देना राष्ट्रवाद तो कहा जा सकता है परंतु राष्ट्रीयता नहीं।

28 जनवरी को माननीय अजित सिंह धोलेरा ने पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'बड़े सवेरे किसी दिन पाया' के अर्थ पर चर्चा करते हुए बताया कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में समर्पण करने के अवसर आते हैं परंतु ऐसे अवसरों का लाभ जागृत व्यक्ति ही उठा सकते हैं। सेवा के मार्ग में जो कुछ समर्पण किया जाता है उसका कई गुना हमें प्रतिदान मिलता है। जो सब कुछ देने वाली शक्ति है वही यदि हमसे कोई मांग करे तो उस मांग के बदले अपना सर्वस्व समर्पण करना ही बुद्धिमानी है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी ऐसा ही मार्ग है जिस पर हम अपना जो भी अंश समर्पण करते हैं वही स्वर्णिम और सार्थक बन जाता है। प्रारम्भ में हम संघ में अपनी किसी आवश्यकता की पूर्ति की आशा में ही आते हैं। लेकिन संघ को जानने व समझने पर हमें पता चलता है कि यह लेने का नहीं अपितु देने का मार्ग है। साहसी साधक ऐसी परिस्थिति में पीछे न हटकर यत्किंचित समर्पण के लिए प्रस्तुत होता है। ऐसे में संघ को कुछ देने के लिए साधक जब आत्मचिंतन करता है तब उसे अनुभव होता है कि उसके पास देने के लिए, त्याग करने के लिए अपने अहंकार और मोह के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। सच्चे साधक इस अहंकार और मोह का भी समर्पण संघ के लिए कर देते हैं और ऐसे ही साधक संघ की युगों की मंजिल के राही बनते हैं। तभी साधक को अपने सौभाग्य का भी अनुभव होता है कि उसने जो दिया है उससे अनन्त गुना वापिस पाया है।

4 फरवरी को शाखा की दूसरी कड़ी में 'इस यज्ञकुण्ड की ज्वाला में' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि संसार में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं - साधारण और असाधारण। साधारण व्यक्ति केवल स्वयं की चिंता में जीवन बिताता है और असाधारण लोग समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा हेतु किए जाने वाले यज्ञ में अपना जीवन आहूत करते हैं। संघ भी ऐसा ही यज्ञ कुंड है जिसकी ज्वाला में ऐसे ही असाधारण साधकों के प्राण रंग बिखेरते हैं। जो अपने लिए न जीकर अन्यों के लिए जीते हैं उनका मन कभी थकता नहीं है, उनका उत्साह कभी खण्डित नहीं होता। अपनी अनूठी प्रणाली से ऐसे साधकों के माध्यम से ही संघ जनमानस को निश्चित रंग में रंग रहा है, कर्त्तव्य ज्ञान की समाज में पुनर्स्थापना कर रहा है और एक सबल, जागृत और आदर्श समाज के निर्माण का कार्य कर रहा है। 11 फरवरी को शाखा की तीसरी कड़ी में 'किसने मुझे कहा था' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ किसी की महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नहीं बना है बल्कि समाज की सनातन आवश्यकता की पूर्ति के लिए बना है। इसलिए जो अपने किसी स्वार्थ अथवा महत्त्वाकांक्षा के कारण संघ में आता है वह उनकी पूर्ति न होने पर निष्क्रिय ही नहीं बल्कि विरोधी भी बन सकता है। परंतु इस प्रकार के धोखे और विरोध को भी पूज्य तनसिंह जी ने प्रेमपूर्वक स्वीकार किया। अपनी समस्त प्रतिभा व क्षमता का उन्होंने केवल समाज के लिए उपयोग किया और स्वयं के लिए कुछ भी बचा कर नहीं रखा। वे निरंतर कर्मशील रहे और साथियों के धोखे और विरोध को भाग्य की देन मानकर स्वीकार करते रहे। उन्होंने सदैव विरोध को और अधिक प्रचंड बनने की, और अधिक समर्थन जुटाने की चुनौती दी और वे सभी चुनौतियां कौम की सेवा के उनके प्रबल संकल्प के सामने छोटी सिद्ध हुई। इसीलिए उनका महान व्यक्तित्व आज भी दीपक बनकर कौम के युवाओं की राह को उज्ज्वल कर रहा है।

बालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन

वागड़ क्षत्रिय महासभा, ब्लॉक दोवड़ा (डूँगरपुर) के तत्वावधान में क्षत्रिय समाज की एक दिवसीय बॉलीबाल खेल प्रतियोगिता पांतली गाँव में रखी गई । जिसमें पांतली, गेहूँवाड़ा, वाड़ा, पिपलादा, तराला, सटोड़ा, ओडवाड़िया गाँवों ने भाग लिया । कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वल्लन से हुई, तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत एवं उद्बोधन हुआ। अरविन्द सिंह गेहुवाड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती कार्यक्रम के बारे में सभी को अवगत कराया। तत्पश्चात खेल का आरम्भ हुआ जिसमें गेहुँवाड़ा टीम विजेता एवं पांतली टीम उपविजेता रही ।

राव चांपा जी की जयंती मनाई

फलोदी प्रांत की बामणू शाखा में रविवार, 14फरवरी को चांपावत कुल के प्रवर्तक 'राव चांपाजी राठौड़' की 608वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर विजय सिंह बामणू व राजेन्द्र सिंह बामणू ने चांपा जी का जीवन परिचय दिते हुए अपने विचार रखे। भवानी सिंह पीलवा ने संघ के हीरक जयन्ती वर्ष की चर्चा करते वर्ष भर होने वाले कार्यक्रमों में सभी से सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया। इसी प्रकार कापरडा तहसील बिलाड़ा, में 14 फरवरी 2021 रविवार को वीर शिरोमणि राव चांपा जी की 608 वीं जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर कापरडा तालाब स्थित राव चांपा जी की छतरी पर पूजा अर्चना व पुष्पांजलि कार्यक्रम रखा गया जिसमें सभी आगंतुकों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में विभिन्न ठिकानों से पधारे हुवे चांपावत प्रतिनिधियों ने इस अवसर पर राव चांपाजी की छतरी के जीर्णोद्धार सहित अनेक विकास कार्य करवाने की योजना बनाई, जिससे यह स्थान रमणीक तीर्थस्थल बन सके। कार्यक्रम में चांपावत समाज की नवीन कार्यकारिणी हेतु घनश्याम सिंह गंठिया, सवाई सिंह रणसीगांव व डूंगर सिंह कापरडा को अधिकृत किया गया। आयोजन समिति के संयोजक डूंगर सिंह कापरडा ने पधारे हुवे सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया व अगले वर्ष भी कापरडा में वीर चांपा जी की जयंती का कार्यक्रम बड़े स्तर पर आयोजित करने की घोषणा की।

राष्ट्र द्रोह और राज द्रोह

वर्तमान में देश के वातावरण में इन दोनों शब्दों का पर्याप्त उपयोग हो रहा है। अनेक लोगों पर राष्ट्र द्रोह के मुकदमें लगाने की बातें समाचार माध्यमों में एक पक्ष द्वारा प्रसारित होती रहती हैं तो वहीं दूसरा इनका खंडन करता है और उनके द्वारा किए गए विरोध को राष्ट्र द्रोह नहीं मानता है। इतिहास के कतिपय उदाहरणों से हम समझने का प्रयास करेंगे कि राष्ट्र द्रोह और राज द्रोह क्या है? क्या ये दोनों पर्यायवाची हैं या अलग-अलग हैं? यदि अलग-अलग हैं तो कब तक हैं, इनकी क्या सीमाएं हैं? कब राज द्रोह राष्ट्र द्रोह बन जाता है और कब तक वह उचित है। जैसा कि इन शब्दों से ही स्पष्ट होता है राज द्रोह राजा के विरुद्ध द्रोह है, राजा का विरोध है। शासन का विरोध है वहीं राष्ट्र द्रोह उस पवित्र भावना का विरोध है जो एक भू-भाग में रहने वाले लोगों को एक राष्ट्र के रूप में संयोजित करती है। यह एक ऐसा कलंकित कृत्य है जो राष्ट्र के दुश्मनों को शक्ति प्रदान करता है और राष्ट्र को कमजोर करता है। इसीलिए राष्ट्र द्रोह एक घृणित कृत्य है और ऐसा करने वाला व्यक्ति सदैव हेय दृष्टि से ही देखा जाना चाहिए। लेकिन राज द्रोह इस श्रेणी में नहीं आता। यदि राजद्रोह को नैतिक रूप से गलत सिद्ध कर दिया जाए तो राजा निरंकुश हो जाता है और राष्ट्र पर महत्ता पा लेता है। जिसका परिणाम यह होता है कि राष्ट्र की सत्ता कुछ लोगों की स्वार्थ पूर्ति हेतु अपने ही नागरिकों का शोषण करने लगती है। इसीलिए आवश्यक होने पर राज द्रोह को न केवल आवश्यक माना गया है बल्कि उसे सराहा भी गया है। राज द्रोह और राष्ट्र द्रोह के अंतर को स्पष्ट करने में सर्वाधिक उपयुक्त उदाहरण हमारे समक्ष महात्मा विदुर हैं। हस्तिनापुर उनका राष्ट्र था और धृतराष्ट्र उनका राजा था। राजा एवं राजा की व्यवस्था ने हस्तिनापुर के उज्वल भविष्य पांडवों को लाक्षागृह में जलाकर मारने की योजना बनाई। राज्य के मंत्री होते हुए भी, धृतराष्ट्र के निकटतम सहयोगी होते हुए भी महात्मा विदुर ने राजा एवं उसकी व्यवस्था के इस षड्यंत्र को विफल कर दिया। एक तरह से उन्होंने अपने राजा से तो द्रोह किया लेकिन अपने राष्ट्र के भविष्य को बचा लिया। कंस के राज्य का भगवान कृष्ण ने विरोध किया और यहां तक की अपने ही राजा को मार दिया। यदि वे यह राज द्रोह नहीं करते तो मथुरा को कंस के अत्याचारों से मुक्त नहीं करवाया जा सकता था। लेकिन हम ना ही तो विदुर जी को राष्ट्र द्रोही कहते हैं और ना ही भगवान कृष्ण को। मध्यकालीन इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे जब हमारे पूर्वजों ने अपने ही राजा के खिलाफ अस्त्र उठाए और जनता के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए द्रोह किया। घनानंद राजा ही था यदि चन्द्रगुप्त उसका विरोध नहीं करते तो क्या मगध उसके अत्याचारों से मुक्त हो पाता। इस प्रकार राज द्रोह यदि काल की मांग है, राष्ट्र की मांग है तो वह किया ही जाना चाहिए। लेकिन यहां शर्त काल और राष्ट्र की मांग है, अपनी मांग नहीं। यदि हम अपनी व्यक्तिगत पसंद नापसंद के कारण, अपने व्यक्तिगत अहंकार के कारण या व्यक्तिगत अथवा समूहगत स्वार्थ के कारण राजद्रोह करते हैं तो वह कब राष्ट्र द्रोह में बदल जाता है इसका हमें पता ही नहीं रहता और हम वास्तव में राष्ट्र द्रोही हो जाते हैं। हमारे इतिहास में ऐसे भी अनेकों उदाहरणों की भरमार है जब राजद्रोह राष्ट्रद्रोह में बदल गया और उससे राष्ट्र की अतुलनीय हानि हुई। एक भाई के राजा बनने पर दूसरा भाई उस राज्य के लिए जब दुश्मन से मिल जाता था, उसकी नजर में चाहे वह राज द्रोह ही हो लेकिन वास्तव में वह राष्ट्र द्रोह ही होता था। महाराणा प्रताप के विरुद्ध जगमाल का अकबर से जा मिलना राजद्रोह नहीं राष्ट्रद्रोह ही था। अपने व्यक्तिगत अहंकार पर लगी चोट को न सह सकने के कारण शक्ति सिंह का अकबर की तरफ चले जाना प्रताप का नहीं मेवाड़ का ही विरोध था हालांकि उन्होंने बाद में अपनी इस भूल का प्रायश्चित कर सही मार्ग अंगीकार किया। चन्द्रसेन जैसे राजा के विरुद्ध अकबर से मिलकर राज्य हासिल करना केवल राजद्रोह तो नहीं माना जा सकता। ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे इतिहास में मिल जाएंगे जब राजद्रोह करने वाले कब राष्ट्रद्रोही बन गए, उनको स्वयं को ही अहसास नहीं रहा और परिणाम स्वरूप राष्ट्र की दीर्घकालीन हानि को आमंत्रित करने में सहयोगी बन गए।

अब हम पुनः वर्तमान पर आते हैं। आज यदि सरकार के विरुद्ध बोलने वाले हर व्यक्ति को देश द्रोही/राष्ट्र द्रोही कहा जाता है तो निश्चित रूप से सरकार देश या राष्ट्र की आड़ में खड़ी होकर स्वयं की रक्षा करना चाहती है और यह एक ही सरकार कर रही है ऐसा नहीं है बल्कि सभी सरकारें करती आई हैं और अभी भी चाहे केन्द्र हो या राज्य अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज को दबाने के लिए सरकारें यह हथकंडा अपनाती रही हैं। लेकिन विडंबना यह भी है कि सरकार का विरोध करने वाले अपने विरोध के अतिरेक में, अपने व्यक्तिगत या समूहगत अहंकार व स्वार्थ में कब राजद्रोही से राष्ट्रद्रोही बन जाते हैं इसकी भी कोई सावधानी या गंभीरता का उनमें प्रायः अभाव ही दिखाई पड़ता है। इस अभाव का कारण यही है कि सरकार का विरोध करने वालों के केन्द्र में राष्ट्र नहीं बल्कि स्वयं के व्यक्तिगत या समूहगत मुद्दे होते है और इसी कारण वे यह सावधानी नहीं रख पाते और परिणाम हमारे सामने है। हम नित्य समाचार माध्यमों में राजद्रोहियों को राष्ट्रद्रोही बनते देख रहे हैं, गैर जिम्मेदाराना बयान देख रहे हैं, गैर जिम्मेदाराना व्यवहार देख रहे हैं और इन सबके बीच सरकार को अपने विरुद्ध उठने वाली हर आवाज को राष्ट्रद्रोही घोषित करते देख रहे हैं। इन सब समस्याओं का एक मात्र उपाय ऐसे लोगों को तैयार करना है जिनके जीवन के केन्द्र में समाज हो, राष्ट्र हो और विश्वात्मा का दृष्टिकोण हो। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी आवश्यकता की पूर्ति में संलग्न है।

(पृष्ठ चार का शेष)

महात्मा...

लेकिन दुर्भाग्य से उन महात्मा के चेलों ने महात्मा बनने की भूख पैदा किए बिना उनके साधनों का भरपूर प्रचार किया और उनका भरपूर उपयोग भी किया। परिणामतः भारतीय संस्कृति की यह महान धरोहर (सत्य और अहिंसा) क्षुद्र लोगों की क्षुद्र आकांक्षाओं की पूर्ति की साधना बनती चली गई और निरन्तर बनी हुई है। सत्ता प्राप्त करने के लिए या सत्ता में बने रहने के लिए निम्न स्तर के समझौते करने को तत्पर लोग जब महात्मा के इन पवित्र साधनों का गुणगान कर भी अपना चरित्र वैसा ही बनाए रखते हैं तो महात्मा के साथ-साथ उनके इन साधनों की पवित्रता का भी ह्रास ही करते हैं। इसी ह्रास के शिकार ये साधन चीख-चीख कर पुकार रहे हैं कि हमारी सीमा का ख्याल रखो और हमें अपनाने से पहले महात्मा बनने की ओर अग्रसर होवो, हम क्षुद्र लोगों की क्षुद्र आकांक्षाओं के लिए नहीं हैं।

पूज्य तनसिंह जी सुजस

दीपसिंह रणधा

- दोहा -

साय करो मां सुरसती, अधरां अमी उचार।
सुजस चवूं बलवंत सुत, वंदूं बारंबार।।1।।
माघ मास वदि चौथ मुद, समत असीकौ साल।
इल पर भेज्यौ ईशवर, लखगुण तणजी लाल।।2।।
सोढी जायौ सूरमो, धर बाढांणा धीश।
अलख जगावण उतरियो, जगतपाळ जगदीश।।3।।
अणभै हेलो आवियो, कण कण दीठी कौम।
संघ बणायो सांवठो, महकी मायड़ भोम।।4।।
पुरसारथ पसरावियो, पनपायी जग प्रीत।
तप राखी तणराज जी, रजवट हंदी रीत।।5।।

-:: छंद- रेणकी ::-

ऊजळ कुळ साख अपरबळ अचळा, धर पर कमधज सबळ धणी।
भीमावत सूर पछम दिस भूपत, शान सकल संसार सुणी।
बाळक नर जलम लियो घर बळवँत, दिव्य नाम तणराज दियो।
तपसी तणराज जलम भर तपवत, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।1।।
क्षतरी संघ सकल सिरज तण समरथ, भरतखंड संस्कार भरै।
चालत सह राजपूत इक चीलै, करम सुकीरत मनुज करै।
फरकै नभ ध्वज केसरिया फरहर, हरखत सब जन जात हियो।
तपसी तणराज जलम भर तपवत, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।2।।
रजपूती धरम धरण थिर राखण, च्यार कूंट बंधवन चुणै।
कमधज तणजी कळजुग रो किरसण, गीता कूं सद ज्ञान गुणै।
रजवट मरजाद राख निज रुदये, दूत बणै उपदेश दियो।
तपसी तणराज जलम भर तपवत, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।3।।
जागी घट पीड़ उठी उर झुरळक, कौम खड़ी कुरळाट करै।
मारग चुत होय मतौमत मचले, गुण रजवट हिम जैम गरै।
बिखरोड़ा देख सकल जग बांधव, देव रूप मग संघ दियौ।
तपसी तणराज जलम भर तपवत, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।4।।
सिरजण कर सरस सफलतम साहित, भावपूर उदगार भरै।
गूंजत झनकार गीत गुणदायक, कँवळ कँवळ झंकृत करै।
रजपूती रगत रमै रग रग मह, जीवजूण संघवत जियौ।
तपसी तणराज जलम भर तपवत,, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।5।।
शाखा सनहेत मिळण घण शिवरां, जंगल जंगल जोत जगै।
भूल्या भटक्या भव भव रा भाई, लैण सुजातिय आय लगै।
चालत सह क्षात्र धरम शुध चीलै, जय सँघ शगती जोश जयौ।
तपसी तणराज जलम भर तपवत,, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।6।।
परमेसर धाम सकल जन पावत, सद मारग पर जो संचरै।
नारायण आयुहवान जपत नित, धर अमरापुर चरण धरै।
साधक भगवान निरंतर सँघमय, कर समरण कवि 'दीप' कयौ।
तपसी तणराज जलम भर तपवत,, कौम सुधारण काज कियो।।
जीय, कौम उजाळण काज कियो।।7।।

:: कलश छप्पय ::

तप कियो तणेराज, कौम सुधारण कारणै।
तन दियो तणेराज, सत मारग संवारणै।।
तमस तज तणेराज, भाण इला भळकावियो।
तेज बुधि तणेराज, सतवत संघ सजावियो।
वंश क्षत्रीय नंह वीसरै, गौत तणैज गवाळ कूं।
देवी वरणै कवि 'दीपियो'', रँग रजवट रुखवाळ कूं।।

उदयपुर व कुणघेर में संभागीय बैठक

संघ के हीरक जयंती वर्ष की कार्य योजना को लेकर मेवाड़ मालवा व मेवाड़ वागड़ संभाग की संभागीय बैठक 30-31 जनवरी को उदयपुर में व उत्तर गुजरात (महेसाणा) संभाग की बैठक कुणघेर गांव में 6-7 जनवरी को सम्पन्न हुई। उदयपुर की बैठक में स्थानीय दायित्वाधीन स्वयंसेवकों, प्रांत प्रमुखों, संभाग प्रमुखों के साथ केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली एवं प्रेमसिंह रणधा भी शामिल हुए। महेसाणा संभाग की बैठक में संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाणा के निर्देशन में स्थानीय प्रांत प्रमुख व अन्य सभी स्वयंसेवक शामिल हुए। दोनों बैठकों में केन्द्र द्वारा प्रदत्त एजेंडा के अनुरूप हीरक जयंती वर्ष से संबद्ध बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। संघ तीर्थ दर्शन, 75 वर्ष 75 कार्यक्रम, विशेषांक में लेख व विज्ञापन, संघशक्ति, पथप्रेरक ग्राहक सदस्यता, साहित्य प्रसार, अनुषंगिक संगठनों के कार्य आदि के प्रभारी बनाए गए एवं तदनुसार लक्ष्य लेकर योजना बनाई गई। 'प्रत्येक स्वयंसेवक को कार्य' कार्यक्रम के तहत उदयपुर में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने सभी ने अपनी रुचि एवं क्षमतानुसार कार्य लेने का आग्रह किया। दोनों बैठकों में हीरक जयंती को लेकर माननीय संघ प्रमुख द्वारा निर्दिष्ट अनुष्ठानों के बारे में बताया गया एवं अपनी-अपनी सुविधानुसार उपयुक्त अनुष्ठान करने को कहा गया। दोनों बैठकों में अपने-अपने संभाग के उन क्षेत्रों को चयनित किया गया जहां संघ कार्य न्यून है और उसके लिए विशेष प्रयास करने हेतु दायित्व सौंपे गए।

सीकर की जिला स्तरीय बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की सीकर टीम की जिला स्तरीय बैठक 6 फरवरी को श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान की मीरा गर्ल्स स्कूल में संपन्न हुई। बैठक में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन व शेखावटी, श्री क्षत्रिय युवक संघ व शेखावाटी तथा राजपूत समाज व शेखावाटी विषय पर चर्चा की गई। बैठक के संभागीयों ने इन तीनों विषयों पर चर्चा करते हुए बताया कि शेखावाटी में अध्ययनरत रहते हुए पूज्य तनसिंह जी के मन में संघ की स्थापना का विचार आया। इस प्रकार शेखावाटी की भूमि में संघ का जन्म हुआ लेकिन वर्तमान में शेखावाटी में दूसरे क्षेत्रों की अपेक्षा काम की गति न्यून है। हमारे में से जिन लोगों ने संघ के शिविर किए हैं, संघ के सम्पर्क से कुछ पाया है, उन सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हमारे को प्राप्त संघ का संदेश आगे प्रसारित करें। शेखावाटी में समाज की स्थिति पर भी विभिन्न दृष्टिकोण से सभी ने अपनी बात कही। वर्तमान सरकार में शिक्षा मंत्री द्वारा हठधर्मिता पूर्वक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में हमारे इतिहास को नैपथ्य में ले जाने के कुत्सित प्रयासों को लेकर भी चर्चा की गई। सभी के द्वारा बताई गई समस्याओं पर श्री क्षत्रिय युवक संघ व फाउंडेशन क्या दृष्टिकोण रखता है एवं इनसे पार जाने के लिए क्या उपाय कर रहा है, इस विषय पर भी जानकारी दी गई। आगामी समय की कार्य योजना पर चर्चा कर तय किया गया कि फाउंडेशन के सहयोगियों के लिए आगामी 11 से 14 मार्च तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक शिविर रखा जाए। शिविर की व्यवस्था एवं संभावित शिविरार्थियों को चिह्नित करने व उनसे आग्रह करने का निश्चिय किया गया। सीकर जिले में निर्वाचित सरपंचों एवं अन्य जन प्रतिनिधियों की बैठक करने को लेकर भी चर्चा की गई। इस प्रकार मिलने के अवसर बार-बार जुटाने का भी निर्णय लिया गया।

अधिकारियों की वर्चुअल बैठक

प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करवाने का निर्णय

राजपूत समाज के कुछ अधिकारियों की 27 जनवरी को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में एक वर्चुअल बैठक 27 जनवरी को आयोजित की गई। बैठक में कोरोना काल के बाद नए सिरे से कार्य योजना बनाकर विगत वर्ष 'संघशक्ति' में हुई भौतिक बैठक के निर्णयों को धरातल पर उतारने को लेकर विचार-विमर्श किया गया। बैठक में Wincompte App के माध्यम से एक ऑनलाईन क्षत्रिय विद्यार्थी प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन करवाने का निर्णय लिया गया एवं इसकी क्रियान्विति का दायित्व वरिष्ठ अधिकारी प्रकाश सिंह भदरू को दिया गया। श्री भदरू ने ही इस एप को विकसित किया है। उन्होंने यह परीक्षा 5 फरवरी से प्रारम्भ कर दी है जो 20 फरवरी तक चलेगी। यह इस परीक्षा का प्रथम चरण होगा, इसके उपरान्त द्वितीय चरण की परीक्षा आयोजित होगी। योजनानुसार दोनों चरणों के उपरान्त मेरिट में अव्वल रहे 33 विद्यार्थियों को पुरुस्कृत किया जाएगा एवं उनके कैरियर संबंधी मार्गदर्शन के लिए विशेष प्रयास करने की योजना है। साथ ही बैठक में यह निर्णय भी किया गया कि आरएएस एवं आईएएस परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके विद्यार्थियों की सूचनाएं एकत्र की जाएं एवं उनमें से संभावनाशील युवाओं पर विशेष प्रयास किए जाएं। इसके लिए भी SKPF की मेल आईडी पर सूचनाएं मांगी जा रही है और 25 फरवरी इसके लिए अंतिम दिनांक तय की है। अनेक अभ्यार्थियों की सूचना प्राप्त हुई है और आ रही है। बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने तय किया कि साथी अधिकारियों से निवेदन किया जाएगा कि वे अपने कार्य क्षेत्र या निकट के क्षेत्र में माह में एक बार विद्यार्थियों के समूह से मिलकर उनके कैरियर संबंधी चर्चा करें। साथ ही प्रतिमाह एक लाईब्रेरी समाज के युवाओं के लिए तैयार करने के लक्ष्य पर भी चर्चा की गई। आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण का अधिकतम लाभ लेने के लिए विशेष जागृति अभियान चलाने का निर्णय लिया गया एवं इसके लिए ऑनलाईन वेबिनार आदि का सहारा लेने की चर्च की गई। बैठक में राजेन्द्रसिंह आंतरी, प्रकाशसिंह भदरू, महावीरसिंह जोधा, दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह आदि अधिकारियों ने अपनी भागीदारी निभाई।

कल्ला रायमलोत का बलिदान दिवस मनाया

वीरवर कल्ला रायमलोत का बलिदान दिवस 6 फरवरी को सिवाना के मोकलसर रोड़ स्थित कल्ला रायमलोत सर्किल पर संत श्री गोपालराम महाराज के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के संभाग प्रमुख मुलसिंह काठाड़ी ने बताया कि कल्ला रायमलोत का जीवन त्याग बलिदान की कहानी है। हमारा इतिहास हमारी प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है और बना रहेगा और इतिहास से अच्छी चीजें ग्रहण कर प्रेरणा लेने के अभ्यास का नाम ही श्री क्षत्रिय युवक संघ है। संघ एक व्यक्ति पूज्य श्री तनसिंह जी के मन की उपजी हुई पीड़ा थी समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति और मानवता के प्रति। उस पीड़ा को, उस विचारधारा को, उस गीता के ज्ञान को, उस भगवान श्रीकृष्ण की वाणी को हम हमारे जीवन में उतारें, अनुसरण करें और आचरण में उतारें। ऐसे कार्यक्रमों में हम हमारी सहभागिता निभा कर हमारे महान पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें। हम भूलें नहीं हमारे इतिहास को, हमारी कुल परम्पराओं को, हमारी संस्कृति को, हमारे पूर्वजों के दिए हुए सद् संस्कारों को जिनके कारण हमारा अस्तित्व शेष है। कार्यक्रम के संबोधित करते हुए सिवाना विधायक हमीरसिंह ने कहा कि इतिहास पुरुषों को समय समय पर याद किया जाना चाहिए। गणपत सिंह गोलिया ने कार्यक्रम को संबोधित करते कल्ला रायमलोत का त्यागमय जीवन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या युवक, बालिकाओं एवं प्रबुद्धजनों ने भाग लिया।

अजीत सिंह धोलेरा को पत्नी शोक

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा की पत्नी श्रीमती राजकुंवर बा

का 81 वर्ष की उम्र में 14 फरवरी को देहावसान हो गया। इनके पुत्र अशोक सिंह, पौत्र रितुराज व दिव्यराज भी संघ के स्वयंसेवक हैं। माननीय अजीत सिंह ने 15 फरवरी को उनके अंतिम संस्कार के बाद सभी से निवेदन किया कि हमारे शास्त्रों के अनुसार दाहसंस्कार ही अंतिम संस्कार होता है इसलिए उनकी पत्नी के अंतिम संस्कार के पश्चात और कोई प्रचलित संस्कार नहीं किया जाए एवं वे अपना संपूर्ण जीवन शिद्दत से जीकर गई हैं इसलिए कोई शोक आदि की रस्म भी न रखी जाए।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org